सं. ग्रो. वि./एफ.डी./86-85/36212. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है. कि मैं. कास्ट-ई-कुला, प्लाट नं. 108, रीक्टर-6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री महंग् थादव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इतिलए, अब, औद्योगिक विजाद अधिनियम, 1947, की धारी 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिवितयों की प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, विनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7फरवरी, 1958 द्वारा उनते अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से भूसेंगत अथवा संबन्धित मामला है :--

क्या श्री महंगू यादव की सेवाशों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नंहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि./ग्रम्बाला/95-85/36219!—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. दयोराह कोग्रोप्रेटिव केडिट एण्ड सर्विस सोसायटी. लि. दयोराह् डा० क्योडक, तहसील कैथल, जिला कुरुक्षेत्र के श्रमिक श्री महिन्द्र सिंह तथा उसके प्रबन्धकीं के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कीई ग्रीद्योगिक विवाद है:—

ग्रौर चूंकि ह्रियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं.-3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायानिय श्रम्बाला के विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दण्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों लथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है ;--

क्या श्री मोहिन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायौचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? ..

सं. अते वि./ग्रम्बाला/106-84/36225. चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि कार्यकारी अभियन्ता (कन्स्ट्रकशन वाच) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के श्रमिक श्री जीत सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदयोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रंब, ग्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसते द्वारा संरकारी श्रीधसूचना सं.3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैंल, 1984 द्वारा ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय श्रम्बाला के विावदग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्श्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा क्षमिक के बीच या तो विचावग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है;

क्या श्री, जीत सिंह की सेवाग्रों का समापत न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 6 सितम्बर, 1985

- सं. श्रो. वि./यमुना/38-85/3671% - चूंकि हिस्याणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० (1) भ्रायुक्त, हिरयाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैंनेजर, हिरयाणा रोड़बेज, यमुनानगर के श्रीमक श्री बलबीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भ्रौद्गौगिक विवाद है:

ब्रीर चूंकि ह्रियांणा के राज्यपाल विवाद को न्यांयनिर्णत हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्यौगिक विवाद अधिनिथम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)84-3-श्रम विवाद अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय अम्बाला को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री बलबीर सिंहु की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?